अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

ईमान बिल्लाह यानी अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब ये है कि उसको हमेशा से मौजूद माना जाये, उसको संसार का पैदा करने वाला और संसार का अकेला प्रबंध करने वाला माना जाये, और इस बात को स्वीकार किया जाये कि उसका कोई साझी और शरीक नही न दुनिया को पैदा करने मे और न दुनिया का कानून चलाने मे, और माना जाये कि हर तरह के ऐब और हर किस्म की कमी से उसकी जात पाक है, और वह तमाम अच्छी सिफतों (आदतों) का मालिक और तमाम खूबियों वाला है. [मुस्लिम, रावी उमर बिन खत्ताब रदी, रिवायत के एक हिस्से का खुलासा]

◈ अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब

मुआज रदी, बयां करते है कि मे रसूले करीमﷺ के बिलकुल करीब बैठा हुवा था, सुनने और सुनाने मे कोई परेशानी भी नही थी, रसूले करीमﷺ के फरमान को आसानी के साथ सुन सकता था, लेकिन जो बात रसूले करीमﷺ फरमाना चाहते थे बडी अहम थी, इसलिये रसूले करीमﷺ ने तीन बार पुकारा और कुछ नही फरमाया- ये इसलिये किया ताकि मुझ पर इस बात की एहमियत साफ हो जाये और मे खूब कान लगा कर बात सुनु, रसूले करीमﷺ के फरमान से तौहीद की एहमियत मालूम हुवी कि ये जहन्नम के अजाब से बचाने वाली है, जो चीज अल्लाह के गुस्से से बचाने वाली और जन्नत का हकदार बनाने वाली हो उससे ज्यादा कीमती चीज बन्दे की निगाह मे और क्या होगी. [मुत्तफक अलैही रिवायत का खुलासा]

◈ ईमान का असर ज़िन्दगी के मामलात पर

रसूले करीमﷺ के इस फरमान का मतलब यह है कि जो शख्स अल्लाह के हुकूक और बन्दो के हुकूक जिन की पूरी

सूची अल्लाह की किताब मे है अदा नहीं करता उस का ईमान पुख्ता नहीं है और जो शख्स किसी बात को निबाहने का अहद (वादा) करे फिर उसे न निबाहे, उस वादे को पूरा न करे, वह दीनदारी की नेमत से महरूम है जिस के दिल मे ईमान की जडे मजबूत जमी होती है वह तमाम हुकूक की अदायगी मे इमानदार होता है किसी हक की अदायगी मे वह खयानत नहीं करता, इसी तरह जिस आदमी के अन्दर दीनदारी होगी वह अहद को मरते दम तक निबाहेगा, याद रहे कि सब से बडा हक अल्लाह का है, उसके रसूल का है उसकी भेजी हुई किताब का है और सब से बडा अहद वह है जो आदमी अपने अल्लाह से और उसके भेजे हुये नबी से और नबी के लाये हुये दीन से करता है. [मिश्कत, रावी अनस रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ ईमान का असर अखलाक पर

रसूले करीमﷺ ने फरमाया- ईमान ये है कि आदमी अल्लाह की राह अपने लिये पसन्द करे और उस राह मे जो कठिनाया

आये उनको बरदाश्त करे और अल्लाह के सहारे आगे बढता जाये यह सबर है और आदमी अपनी कमाई अल्लाह के मोहताज व बेसहारा बन्दों पर अल्लाह को खुश करने के लिये खर्च करे और खर्च करके खुशी महसूस करे यह समाहत है. [मुस्लिम अन अमर बिन अब्बास रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ कामिल ईमान की निशानिया

रसूले करीमﷺ ने फरमाया- कि आदमी अपनी तरबियत करते करते इस हालत को पोहोच जाता है कि वो जिस्से जुडता है और जिस्से कटता है, अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने के लिये उससे जुडता और कटता है, दीन के लिये किसी से मोहब्बत करता है और किसी से नफरत, उसकी मोहब्बत और नफरत किसी जाती गर्ज और दुनियावी फायदे के लिये नही होती, जब आदमी की ये हालत हो जाये तब समजो कि उसका ईमान मुकम्मल हुवा.

[बुखारी, रावी अबू उमामा रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ ईमान की मिठास हासिल होना

रसूले करीमﷺ ने फरमाया- कि अल्लाह की बन्दगी मे अपने आप को दे कर और इस्लामी शरीयत की पेरवी करके और अपने आप को रसूले करीमﷺ की रेहनुमाई मे देकर पूरी तरह मुतमईन है, उसका फैसला है कि मुझे किसी और की तो बन्दगी नही करनी है, और हर हालत मे इस्लाम पर चलना है, और रसूले करीमﷺ के सिवा किसी दुसरे इन्सान की रेहनुमाई मे जिन्दगी नही गुजारनी है, जिस शख्स का हाल ये हो जाये तो समझ लो कि ईमान की मिठास उस ने पाली.

[बुखारी, मुस्लीम, रावी अब्बास रदी रिवायत का खुलासा]